अध्याय अट्ठाईसवाँ

॥श्री गणेशाय नम:॥ श्री सरस्वत्यै नम:॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नम:॥

"सिद्धनाथजी के दिव्य चरणों को प्रणाम करते हैं। आप का शरीर भक्तों को भवसागर पार लगाने के लिए ही है। आप के कारण सचमुच अनेक भक्त भवसागर पार हो जाते हैं और उसके पश्चात वे स्वयं अन्य लोगों को पार लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं।"

हे सतगुरु सिद्धारूढ़जी, भक्तों को वरदान देने वाले, आत्मप्राप्ति की मनोकामना होने वाले, ज्ञान यही स्वरुप होने वाले, हृदय में आत्माराम (आत्मा ही ईश्वर है) के रुप में बसने वाले और स्वयं ही एक पवित्र स्थान होने वाले आप को मेरा प्रणाम है। जिस प्रकार भडकी हुई आग, गिली तथा सूखी सभी वस्तुओं को जलाकर राख कर देती है, उसी प्रकार ज्ञान रूपी अग्नि शुभ तथा अशुभ दोनों का जलाकर राख कर देता है। जिस प्रकार पूरे वर्ष में कष्ट से बनाए हुए कुम्हार के उत्तम मटके लाठी के प्रहार से एक पल में मिट्टी में मिल जाते हैं, उसी प्रकार अज्ञान से दीर्घकाल तक तैयार किया हुआ यह सांसारिक जाल, ज्ञान की लाठी के प्रहार से नष्ट हो जाता है और उसके पश्चात केवल चैतन्य रह जाता है। सतगुरुजी के हृदय में स्थित वह ज्ञान, शुद्ध भावना से उनके चरणों में शरण जाते ही, वे हमें दे देते हैं। उस ज्ञान के बल पर साधक सारे अज्ञान का नाश करके, स्वयं और अन्य प्राणी, चल तथा अचल, ये सारे ईश्वर का रूप ही है, इस प्रकार का आत्मस्वरूप प्राप्त करके सुख से रहता है। इसी प्रकार के दृष्टिकोण से जगत को देखता है। जिस प्रकार हमें अपना शरीर अच्छी तरह से दिखाई देता है, उसी प्रकार आत्मरूप से जगत को देखते ही सारा विश्व निर्मल दिखाई पड़ता है, तथा क्रोध और व्देष का उच्चाटन होता है। ऐसी स्थिति को प्राप्त किए हुए व्यक्ति को "ज्ञानी" कहते है, जिस की अखंड संगति से अज्ञानी जन भवसागर के पार होकर उनका उद्धार होता है। ऐसे वे सतगुरुमहाराजजी, जो विविध प्रकार की लीलाएँ आसानी से दिखाते हैं, परंतु भक्तों के उद्धार के सिवाय उनके मन में अन्य कोई हेतु नहीं होता। सिद्धारूढ़जी दयालु होने के कारण, जो उनका चिंतन करते हैं उनके पास वे हमेशा रहते हुए संकटों में उनकी सहायता करते हैं|

प्रतिदिन प्रात:काल के समय अनेक भक्तगण सतगुरुजी के पास बैठकर भजन करते थे और उसके पश्चात सतगुरुजी की आरती उतारते थे। प्रात:काल के समय भक्तों को नींद से जगाने के लिए एक व्यक्ति उनके घरतक जाकर उन्हें सही समय पर जगाती थी। वह मनुष्य घरतक आकर घरके सदस्यों के जगने तक दरवाजे के पास खड़ा होकर "शिवाय नम:" की गरजना करता था और उस घर के सदस्यों के जगने तक दूसरे घर नहीं जाता था। इसीलिए सभी भक्तों ने मिलकर उसका नाम "शिवाय नम:" रखा था; वह दरवाजे के समीप पहुँचते ही सभी भक्तगण निद्रा का भ्रम दूर करके सिद्धारूढ़जी के पास जाने के लिए तैयार हो जाते थे। इस प्रकार वह मनुष्य भक्ति तथा परोपकार, श्रद्धा से करता था तथा भजन के लिए सही समय भक्तों को जगाता था इसलिए लोग उसे बहुत प्रेम करते थे। भक्तों के लिए वर्षा तथा अंधेरे की परवाह किए बगैर वह पूरा गाँव घूमता था। इस संदर्भ में, श्रोतागण, एक अचरज हुआ, उसे सावधान होकर सुनिए।

एक बार रात के चार घंटे हुए थे तब "शिवाय नम:" बाहर निकल पड़ा और हमेशा की तरह ईश्वर के नाम की गरजना करते हुए मार्ग से जा रहा था। प्रात:काल का समय हुआ होगा ऐसा समझकर प्रतिदिन की तरह भक्तों को उनके घर के बाहर खड़ा होकर ईश्वर के नाम की गरजना करते हुए जगाने लगा था। उस समय मार्ग से जाने वाले गश्ती के सिपाहियों ने उसे देखा; उन्होंने उसे मार्ग में ही रोक लिया और पूछा, "अरे, कौन है तू? रात के समय मार्ग से अकेले ही घूमते हुए, जोरजोर से चिल्लाकर सोये हुए लोगों के जगाकर क्यों सता रहे हो? खबरदार, एक कदम भी आगे मत बढ़ाओ।" ऐसा सिपाही कह रहे थे फिर भी, उनकी बातों की ओर ध्यान न देते हुए वह गरजना करते हुए आगे चलता रहा। उस समय क्रोधित हुए दो सिपाहियों ने उसके दोनों हाथ जकड़कर उसे लेकर वे पुलिस थाने की ओर निकल पड़े। फिर भी ईश्वर के नाम का उच्चारण उसके मुँह से थम नहीं गया, ये देखकर उन्होंने उसके मुँह में कपड़े का गोला ठूंस दिया और उसे लेकर वे निकल पड़े। लोगों के लिए जो भक्त कार्य करता है, ऐसे भक्त पर सतगुरुजी हमेशा ही गर्व करते हैं, इसीलिए अपने भक्त को कष्ट होते देखकर सतगुरुजी जग गए। भक्त ने कोई अन्याय न करते

हुए भी सिपाही उसको निर्दयतासे सता रहे है तथा उसका पुण्य कर्म भी खंडित हुआ है, ये देखकर सतगुरुजी मन ही मन तड़प उठे। उसपर सिद्धारूढ़जी थानेदार का रूप धारण करके तथा उसी के समान वस्त्र धारण करके घोडे पर सवार होकर सिपाहियों के पास आए। सिपाहियों ने थानेदार को देखते ही तत्काल उसे सलाम किया। थानेदार ने उन्हें पूछा, "किसे पकड़कर आप ले जा रहे हैं? क्यों आप ने उसके हाथ जकड़कर उसके मुँह में कपड़ा ठूंस दिया है, यह पहले बताओ।" सिपाहियों ने कहा, "यह मनुष्य रात के समय हर घर के पास जाकर चिल्लाकर घर के सदस्यों को जगाता है। रातभर चिल्लाता हुआ घूमता रहता है, जिससे लोगों को कष्ट होते हैं। चिल्लाने के लिए मना करने के बावजूद भी चिल्लाता रहा, इसलिए उसके मुँह में कपडा ठूंस दिया है। इसे दंड दिये बगैर यह अपनी आदत से बाज नहीं आयेगा, प्रतिदिन फिर से वही गलती करेगा, इसीलिए हम उसे पुलिस थाने ले जा रहे हैं। क्या इसे पुलिस थाने में जकड़कर रखकर लौटे?" उसपर थानेदार ने कहा, "आप लोगों ने अविचार पूर्वक यह कार्य किया है। सबसे पहले उसके मुँह में ठूंसा हुआ कपडा निकालकर उसके बांधे हुए हाथ खोल दीजिए। यह कोई चोर नहीं। आप लोग भी तो रातभर गश्त लगाते समय लोगों को चोरों से सतर्क करने के लिए 'होशियार' चिल्लाते हुए घूमते रहते हैं, आप का ही कार्य यह मनुष्य बिना वेतन करता रहता है। कम से कम वह ईश्वर का नाम तो लेता है, आप तो केवल चिल्लाते हुए घूमते हैं। आप बाहरी चोरों से सतर्क करने के लिए लोगों को जगाते हैं, तो यह नामस्मरण करते हुए अंदरूनी चोरों (अहंकार, व्देष, माया, मोह आदि दुष्प्रवृत्तियाँ) से लोगों की रक्षा करता रहता है। इस प्रकार लोगों पर एहसान करने वाले को आप ने बिना कारण कष्ट दिये, इसलिए उसे इसी समय छोड़ दीजिए और इसके पश्चात कभी भी मत सताईए।" थानेदार के बातें सुनकर सिपाहियों ने उसे झुककर सलाम किया तथा कुछ न कहते हुए 'शिवाय नम:' को छोड़ दिया और वे अपने काम के लिए चल दिये। उसपर वह थानेदार उस भक्त को बोला, "इन सिपाहियों को कुछ भी समझ नहीं आता। तुम नि:शंक होकर अपना कार्य करते रहो। इस के बाद कोई भी तुम्हारे कार्य में बाधा नहीं डालेगा।" ऐसा कहकर

थानेदार अंधेरे में आगे निकल गया और 'शिवाय नम:' भी पहले की तरह अपने कार्य में जुट गया।

दूसर दिन सुबह वे सिपाही थानेदार के पास गये और पिछली रात को की गयी गलती के लिए क्षमा माँगने लगते ही वह आश्चर्य से हक्काबक्का रह गया। उसने कहा, "किस बात के लिए आप लोग मेरी क्षमा माँग रहे हैं? आप ने ऐसा कौन सा अपराध किया है?" उन्होंने थानेदार से कहा, "साहब, वास्तव में आप अच्छी तरह से जानते हैं की रात को मार्ग से चिल्लाते हुए जाने वाले एक मनुष्य को पकड़कर जब हम पुलिस थाने ले जा रहे थे तब रास्ते में आप हमसे मिले थे। आप हमसे अति क्रोधित हुए थे और उसे छोड़ देने की हमें आज्ञा की थी।" यह सुनकर थानेदार आश्चर्य से दंग होकर बोला, "मैं तो रातभर मेरे घर में चैन की नींद सो रहा था, तब आप जो कह रहे है वह कैसे सच हो सकता है? आप निश्चित ही झूठ बोल रहे हैं।" उन्होंने कहा, "साहब! भला हम क्यों झूठ बोले? हम शत प्रतिशत सच कह रहे हैं।" उसने कहा, "इस बात की सच्चाई का सिद्धारूढ़जी से मिलने के पश्चात ही ज्ञान होगा; और 'शिवाय नम:' भी वहीं होगा।" थानेदार सिपाहियों को साथ लेकर गुरु महाराजजी से मिलने गया और उन्हे प्रणाम करके रात घटी हुई घटना बयान की। सिद्धजी ने कहा, "यही है सतगुरुजी की महिमा! अपने श्रेष्ठ भक्त की संकट में रक्षा करने हेतु सतगुरुजी आप का रूप धारण करके आये थे।" सिद्धनाथजी के शब्द सुनकर सभी भक्तगण आनंदित हुए और तत्पश्चात उनकी आज्ञा लेकर अपने अपने घर लौटे।

श्रोतागण, अब इस कहानी का लक्ष्यार्थ सुनिए। अज्ञान रूपी रात होने से जीवात्मा सो गया। मैं कौन हूँ, कहाँ से और किस लिए इस जगत में आया हूँ और कहाँ जाने वाला हूँ, इन सारी बातों का पूर्ण रूप से विस्मरण होना, इसी को जीवात्मा की नींद कहते है। अज्ञानवश सभी ऐसी ही नींद में सोये रहते हैं। परंतु सतगुरुजी यही अंतरात्मा होकर, वही विवेक रूपी 'शिवाय नम:' को अज्ञानी जीवात्माओं को उसी (सतगुरुजी) के पास भेजने के लिए ईश्वर का नाम लेकर जगाता है। उस समय विवेक कहता रहता है की, जल्दी उठिए तथा स्वरूप (आत्मा) को समझ लीजिए, हृदय में स्थित आत्मा रूपी सतगुरुजी से

भेंट कीजिए, तभी अज्ञान की रात खत्म होगी। विवेक यह काम चोखा करते समय अचानक मतानुयायी रूपी (ईश्वर तथा धर्म संबंधी भिन्न विचार होने वाले लोग) सिपाही उसे मिलकर, चिल्लाकर शोर न मचाने की आज्ञा करते है| वे कहते है, "तुम्हारे हाथों उनके अज्ञान का निवारण नहीं होगा, क्यों तुम व्यर्थ ही लोगों को नींद से जगा रहे हो?" परंतु उसने उनकी बातों पर ध्यान न देने के कारण उन्होंने उसका मुँह बंद किया। विवेक के हाथ बांधकर सभी मतानुयायी उसे ले जाते समय करुणाकर सतगुरुनाथजी वेदांत रूपी थानेदार का रूप धारण करके वहाँ पधारे। वेदांतमत (राय) के रूप में पधारकर उन्होंने सभी मतों का खंडन किया तथा उन्हें अज्ञानी और अविचारी ठहराया। वेदांत रूपी थानेदार ने कहा, "आप केवल षड्रिपू रूपी चोरों से जीवात्माओं की रक्षा कर रहे हैं, परंतु विवेक आप का काम करके उससे भी आगे बढ़कर जीवात्माओं को आत्मस्वरूप दिखाता है। ये आप की समझ में नहीं आयेगा, इसीलिए आप बंदिस्त विवेक को मुक्त कर दीजिए। उसके कार्य में बाधा मत डालिए।" मतानुयायी सिपाहियों ने उनकी आज्ञा स्वीकार की। सतगुरुजी ही अंतरात्मा होने के कारण, उन्होंने विवेक के बंधन तोडे और जीवात्माओं को जगाने हेतु उसे फिर से भेज दिया। यह सब सिद्धसतगुरुजी का ही खेल है।" श्रोतागण, अब अगले अध्याय में बयान की हुई कहानी मन को स्थिर करके सुनने के लिए तैयार हो जाईए। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह अठ्ठाईसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥